11119CH05

पञ्चम अध्याय

ऐतिहासिक महाकाव्य

भारत में ऐतिहासिक विषयों को लेकर काव्य लिखने की एक प्राचीन परम्परा है। वैदिक ऋषियों की सूची, *महाभारत* एवं *पुराण* आदि में दी गई वंशावली अथवा वंशवृक्ष ऐतिहासिक दृष्टि के साक्षात् प्रमाण हैं। विभिन्न प्रकार के अभिलेख-शिलालेख, मन्दिरों की दीवारों, गुफाओं अथवा ताम्रपत्रों पर अंकित विभिन्न वर्णन आदि भारतीयों के इसी ऐतिहासिक चिन्तन को अभिव्यक्त करते हैं। *रामायण, महाभारत* एवं पुराणों की परम्परा का विकास शनैः-शनैः *ऐतिहासिक महाकाव्य* परम्परा में हुआ। *राजतरंगिणी* इसी परम्परा का एक प्रमुख ग्रन्थ है। यहाँ यह स्पष्ट होना अनिवार्य है कि हमारी इतिहास की कल्पना कुछ भिन्न प्रकार की थी।

कुछ पाश्चात्त्य विद्वानों ने भारतीयों के विषय में यह दुष्प्रचार किया कि उनमें ऐतिहासिक चेतना का अभाव था, किन्तु *राजतरंगिणी* आदि अनेक काव्यग्रन्थ इस आक्षेप का पर्याप्त रूप में निराकरण करते हैं। प्राचीन भारतीय परम्परा में घटनाओं का सामान्यत: विवरण तो लोग देते थे, किन्तु उनके साथ तिथियों को अंकित नहीं करते थे। इस अर्थ में ही *महाभारत* को इतिहास-ग्रन्थ कहा गया है। वैदिक साहित्य के अनुशीलन से पता चलता है कि इतिहास लिखने वालों का एक अलग वर्ग था। इतिहास के अन्तर्गत घटनाओं का सच्चा विवरण दिया जाता था।

राजशेखर के अनुसार इतिहास दो प्रकार का होता है— परिक्रिया और पुराकल्प। परिक्रिया उस इतिहास को कहते हैं, जिसका नायक एक व्यक्ति होता है अर्थात् किसी एक राजा के चरित्र का वर्णन करना परिक्रिया है। *रामायण*, *नवसाहसांकचरित, विक्रमांकदेवचरित* आदि इसी प्रकार के ग्रन्थ हैं। दूसरी ओर पुराकल्प वह इतिहास है जिसमें अनेक नायकों का वर्णन होता है। *महाभारत, राजतरंगिणी* आदि इसी प्रकार के इतिहास-ग्रन्थ हैं।

यदि हम संस्कृत के अभिलेखों का अध्ययन करें तो वहाँ पर्याप्त ऐतिहासिक सूचनाएँ काव्य के रूप में मिलेंगी। यहाँ तक कि उनमें तिथियों का भी निर्देश हुआ है। यह सही है कि संसार की क्षणिकता की दार्शनिक भावना से अभिभूत होने के कारण संस्कृत के विद्वानों ने लौकिक व्यक्तियों तथा घटनाओं को बहुत महत्त्व न देकर राम, कृष्ण, शिव आदि देवताओं के विषय में ही महाकाव्य लिखे। फिर भी राजाओं की प्रशस्ति का गान करने वाले कवियों

© NCERT not to be republished

का भी यहाँ अभाव नहीं था। लेकिन आज ऐसी अनेक कृतियाँ नष्ट हो चुकी हैं जिनमें ऐतिहासिक तथ्यों का भण्डार था। लोकोत्तर चरित्र का वर्णन करने वाले महाकाव्यों को यहाँ अधिक सम्मान मिला, जबकि लौकिक पुरुषों से सम्बद्ध काव्य सम्मान नहीं पा सके। *विक्रमांकदेवचरित* अज्ञात कोने में पड़ा रहा, जबकि *नैषधीयचरित* टीकाओं से विभूषित होता रहा। एक ही लेखक बाणभट्ट की *कादम्बरी* पण्डितों के बीच आदर पाती रही, जबकि उनका *हर्षचरित* उतना आदर नहीं पा सका। फिर भी कवियों ने अपने आश्रयदाताओं की प्रशस्तियाँ गद्य में या महाकाव्यों के रूप में लिखीं। गुप्तकाल के अभिलेखों में इन प्रशस्तियों का उत्कर्ष दिखाई देता है। यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि इतिहास पर काव्य का ऐसा गहरा रंग चढ़ा है कि शुद्ध इतिहास को निकालना बहुत कठिन हो गया।

प्रारम्भिक ग्रन्थ

संस्कृत साहित्य में ऐतिहासिक रचनाएँ भी काव्य के रूप में ही मिलती हैं। कवियों ने अपनी रचनाओं द्वारा अपने आश्रयदाताओं को अमर कर दिया। बाणभट्ट (630 ई.) ने अपने आश्रयदाता हर्षवर्धन के प्रारम्भिक जीवन को आधार बनाकर *हर्षचरित* नामक गद्य-काव्य लिखा। वस्तुत: इस रचना में बाण ने अपना, हर्षवर्धन का तथा उसके पूर्वजों का भी काव्यात्मक वर्णन किया है। इसमें हर्ष की राज्यप्राप्ति के समय तक की घटनाओं का वर्णन है। वाक्पतिराज ने प्राकृत काव्य *(गउडवहो)* में कन्नौज के राजा *यशोवर्मन* की विजय का वर्णन किया है। इनका समय 750 ई. है। कश्मीर के ललितादित्य ने *यशोवर्मन* को संग्राम में हराया था। इस काव्य में ग्रामीण जीवन के सजीव चित्र मिलते हैं। पद्मगुप्त का *नवसाहसांकचरित* (1005 ई.) एक प्रकार से संस्कृत का पहला ऐतिहासिक महाकाव्य है, जिसमें 18 सर्ग हैं। इसमें मालव-नरेश सिन्धुराज का इतिहास वर्णित है। सिन्धुराज भोज के पिता थे। इस महाकाव्य में शशिप्रभा के साथ उनके विवाह का वर्णन है। पद्मगुप्त पहले राजा मुञ्ज के सभाकवि थे। मुञ्ज की मृत्यु के बाद सिन्धुराज ने पद्मगुप्त का आदर किया। पद्मगुप्त पर कालिदास की रसमयी पद्धति का बहुत प्रभाव है, इसीलिए इन्हें परिमल-कालिदास भी कहा गया है।

विक्रमांकदेवचरित

इस काव्य के लेखक बिल्हण कश्मीरी थे तथा शिक्षित होने के बाद भ्रमण हेतु कश्मीर छोड़कर निकल पड़े। मथुरा, कन्नौज, प्रयाग, काशी इत्यादि स्थानों से होते हुए वे अन्त में कल्याण के चालुक्य-नरेश विक्रमादित्य (षष्ठ) की राजसभा में पहुँचे। बिल्हण का वहाँ बहुत सम्मान हुआ। अपने संरक्षक की प्रंशसा में बिल्हण ने वहीं 18 सर्गों का महाकाव्य *विक्रमांकदेवचरित* लिखा। इसका रचनाकाल 1088 ई. है। मूलत: यह ऐतिहासिक ग्रन्थ

Rationalised 2023-24

है, जिसे महाकाव्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है। राजा विक्रमादित्य के पूर्वजों का वर्णन करते हुए इन्होंने इसके प्रथम सात सर्गों में ऐतिहासिक तथ्य दिए हैं। इसमें आठवें सर्ग से सत्रहवें सर्ग तक विक्रमादित्य (षष्ठ) का काव्यात्मक वर्णन है। इसमें मुख्यत: नायक और नायिका का प्रणय वर्णित है। विवाह, जलक्रीड़ा, मृगया आदि के वर्णन में बिल्हण ने कई सर्ग केवल महाकाव्य-धर्म का निर्वाह करने के लिए लगाए हैं। बिल्हण इतिहासकार के रूप में निष्पक्ष नहीं है क्योंकि वे राष्ट्रकूटों पर तैलप (873-97 ई.) की विजय का तो वर्णन करते हैं, किन्तु मालव-नरेश द्वारा उसकी पराजय का नहीं। बिल्हण इस महाकाव्य के दो सर्गों में अपने संरक्षक के पारिवारिक कलह का भी वर्णन करते हैं। अंतिम सर्ग में उन्होंने अपने कुटुम्ब का वर्णन करते हुए अपनी भारत-यात्रा का भी वृत्तान्त लिखा है।

काव्य की दृष्टि से *विक्रमांकदेवचरित* बहुत सफल है। इसमें प्रवाह, रोचकता और सरलता सभी गुण हैं। यह प्रसादपूर्ण वैदर्भी शैली में लिखा गया है। भाषा सरल और स्पष्ट है। लंबे समासों का प्रयोग इसमें नहीं मिलता। कालिदास की काव्यशैली बिल्हण पर छायी हुई है। बिल्हण ने *चौरपञ्चाशिका* नामक गीतिकाव्य भी लिखा था। अपनी जन्मभूमि कश्मीर पर कवि को बहुत गर्व है। वे कहते हैं कि केसर तथा कविता कश्मीर को छोड़कर अन्यत्र नहीं होती। कस्तूरी की गंध से युक्त पश्मीने का चादर तथा वितस्ता (झेलम) में चलने वाली नौकाएँ कश्मीर को स्वर्ग बना देती हैं। बिल्हण में कवित्वशक्ति एवं पाण्डित्य के साथ-साथ ऐतिहासिक चेतना भी है।

राजतरंगिणी

राजतरंगिणी निश्चित रूप से संस्कृत साहित्य का श्रेष्ठ ऐतिहासिक ग्रंथ है, जिस पर काव्य का रंग बहुत गहरा नहीं है। कल्हण और उनके इस ग्रन्थ पर संस्कृत साहित्य को गर्व है। कल्हण के पिता चम्पक कश्मीर के राजा हर्ष के सच्चे अनुयायी थे। हर्ष की हत्या हो जाने पर चम्पक ने राजनीति से संन्यास ले लिया और इसलिए कल्हण भी राजनीति से वञ्चित रह गए। हर्ष के संगीत-शिक्षक कल्हण के चाचा कनक थे। राजा उनसे पूर्णत: प्रभावित थे। उन्हीं के कारण परिहासपुर में बुद्धप्रतिमा को बचाया जा सका था। कल्हण शिव के भक्त होते हुए भी बौद्धमत के प्रशंसक थे। उन्होंने संस्कृत साहित्य का गहन अध्ययन किया था। उन्होंने *राजतरंगिणी* की रचना में कश्मीर के समस्त ऐतिहासिक साधनों का प्रयोग किया था। उन्होंने इस काव्य को 1148 ई. में लिखना आरंभ करके तीन वर्षों में पूरा किया। कल्हण कहते हैं कि उन्होंने प्राचीन राजाओं के कथासंग्रह, नीलमतपुराण, विभिन्न शिलालेख, प्रशस्ति-पत्र, प्राचीन मुद्रा आदि का उपयोग करके इस इतिहास-ग्रन्थ को प्रामाणिक बनाया है। उन्होंने देवालयों, प्राचीन भवनों, स्मारकों और शासन-पत्रों का भी अवलोकन किया था।

© NCERT not to be republished
Rationalised 2023-24

राजतरंगिणी में आठ तरंग हैं। इसमें आठवाँ तरंग ग्रन्थ का प्राय: अर्धभाग है। इसमें समकालिक तथा निकट अतीत का इतिहास है। कवि के साक्षात् अनुभव पर आश्रित होने के कारण इस तरंग की बातें विशेषत: प्रामाणिक हैं। आरम्भिक तरंगों में पुराणों का आधार लिया गया है, इसलिए कल्पना का समावेश वहाँ अधिक है। जैसे-जैसे कवि सुदूर अतीत से निकट अतीत की ओर अग्रसर होता गया, वैसे-वैसे उसके वर्णनों में प्रामाणिकता बढ़ती गई।

राजतरंगिणी का आरम्भ किसी गोनन्द नामक राजा के वर्णन से होता है, किन्तु प्रथम तीन तरंगों में काल या तिथि का उल्लेख नहीं है। इसमें पहली तिथि 813 ई. के आसपास है और यहाँ से आरम्भ करके 1150 ई. तक की घटनाओं का प्रामाणिक, पूर्ण और वैज्ञानिक रीति से वर्णन किया गया है। नैतिकता का प्रचार करना कल्हण का मुख्य उद्देश्य लगता है, इसलिए कई राजाओं और मन्त्रियों के अनैतिक कार्यों का वर्णन इन्होंने खुलकर किया है। कल्हण ने कश्मीर में धार्मिक सहिष्णुता दिखाई है, किन्तु कुछ राजाओं के धर्म-विरोधी कार्यों को भी इन्होंने प्रकाशित किया है। कल्हण के इतिहास पर भारतीय जीवन-दर्शन, युगविभाजन, कर्म-सिद्धान्त, भाग्यवाद, तन्त्र-मन्त्र आदि का स्पष्ट प्रभाव है। इन्होंने कश्मीरी नागरिकों की कटु आलोचना की है। लोभी पुरोहितों, अनुशासनहीन सैनिकों तथा दुष्ट कर्मचारियों की इन्होंने घोर निन्दा की है। रानी दिद्दा की महत्त्वाकांक्षा का इन्होंने विस्तार से वर्णन किया है।

राजतरंगिणी एक सच्चे इतिहासकार द्वारा काव्यात्मक शैली में लिखा गया ग्रन्थ है। अलंकारों का प्रयोग बहुत स्वाभाविक रूप से इसमें किया गया है। प्राय: पूरा ग्रन्थ अनुष्टुप् छन्द में लिखा गया है। कहीं-कहीं छन्द बदले गए हैं। कल्हण मूलत: अपने को कवि बतलाते हैं। कुल मिलाकर यह महाकाव्य संस्कृत का गौरव-ग्रन्थ है।

अन्य ऐतिहासिक महाकाव्य

कल्हण की *राजतरंगिणी* को आगे बढ़ाने का कार्य विभिन्न कालों में जोनराज (1450 ई.), श्रीवर (1486 ई.) तथा शुक (1586 ई.) ने किया। फलत: अपने-अपने समय तक का इतिहास इन कवियों ने प्रस्तुत किया। अकबर को *राजतरंगिणी* से बड़ा प्रेम था, इसलिए इसका अनुवाद उसने फारसी में कराया। फारसी में इसके तीन अनुवाद मिलते हैं।

संस्कृत में ऐतिहासिक काव्य परंपरा आगे भी चली। जल्हण ने *सोमपालविलास* में सुस्सल द्वारा विजित राजपुरी के राजा का विवरण लिखा। हेमचन्द्र (1088-1172 ई.) ने अनहिलवाड़ के चालुक्य-नरेश कुमारपाल से सम्बद्ध *कुमारपालचरित* लिखा। इसमें जैनमत की महिमा का वर्णन अधिक तथा इतिहास कम है। तेरहवीं शताब्दी के कवि सोमेश्वर ने *कीर्तिकौमुदी* नामक महाकाव्य में गुजरात के राजा वस्तुपाल का वर्णन किया है। राजा बीसलदेव के सभापण्डित अरिसिंह ने 11 सर्गों का *सुकृत संकीर्तन* नामक महाकाव्य लिखा। इसमें वस्तुपाल के धार्मिक

Rationalised 2023-24

कृत्यों का वर्णन है। विजयनगर के राजपरिवार की वधू गंगादेवी ने 1371 ई. के आसपास अपने पति (कम्पण) की दक्षिण-विजय पर आश्रित आठ सर्गों का महाकाव्य *मधुराविजय* लिखा। नयचन्द्रसूरि ने *हम्मीर-महाकाव्य* 14 सर्गों में लिखा, जिसमें रणथम्भौर के चौहान नरेश हम्मीर का वर्णन किया गया है। जयानक ने *पृथ्वीराजविजय* महाकाव्य (1191-93 ई.) लिखा, जो अपूर्ण रूप में केवल 12 सर्गों में प्राप्त हुआ है। आधुनिक काल में डॉ. काशीनाथ मिश्र ने *राजतरंगिणी* के ढाँचे पर मिथिला के कर्णाटवंशीय राजाओं का वर्णन करते हुए आठ तरंगों में **कर्णाटराजतरंगिणी** लिखी। इस प्रकार कवियों ने किसी राजा या उनके कार्यों से प्रसन्न होकर ऐतिहासिक महाकाव्य लिखे हैं। *शिवराज्योदय, छत्रपतिचरित, गान्धिचरित, विवेकानन्दचरित, गुरुगोविन्दसिंहचरित* आदि बीसवीं शताब्दी में लिखे गए ऐतिहासिक महाकाव्य हैं।

ध्यातव्य बिन्दु

- **ऐतिहासिक महाकाव्य** — भारतीय ऐतिहासिक विषयों को लेकर लिखे गए काव्य।
- **राजशेखर के अनुसार इतिहास के दो भेद** — (i) परिक्रिया और (ii) पुराकल्प
  - (i) **परिक्रिया** — एक नायक के वर्णन वाला इतिहास। यथा — *रामायण, नवसाहसांकचरित, विक्रमांकदेवचरित* आदि।
  - (ii) **पुराकल्प** — अनेक नायकों के वर्णन वाला इतिहास। यथा — *महाभारत, राजतरंगिणी* आदि।
- **हर्षचरित**

  लेखक — बाणभट्ट।

  विषय — राजा हर्षवर्धन का वर्णन।
- **गउडवहो (प्राकृतकाव्य)**

  लेखक — वाक्पतिराज।

  विषय — कन्नौज के यशोवर्मन की विजय का वर्णन।
- **नवसाहसांकचरित**

  लेखक — पद्मगुप्त।

  विषय — मालव-नरेश सिन्धुराज का इतिहास वर्णन।
- **विक्रमांकदेवचरित**

  लेखक — बिल्हण।

  विषय — चालुक्य-नरेश विक्रमादित्य (षष्ठ) की प्रशंसा का वर्णन।

  सर्ग — 18
- **राजतरंगिणी**

  लेखक — कल्हण।

Rationalised 2023-24

विषय — प्राचीन गोनन्द राजा से लेकर 1150 ई. तक के राजाओं से सम्बन्धित घटनाओं का वर्णन।
तरंग — आठ
छन्द — प्राय: अनुष्टुप्।

- **कुमारपालचरित**
  लेखक — हेमचन्द्र। समय — 1088–1172 ई.।
  विषय — अनहिलवाड़ के चालुक्य-नरेश कुमारपाल का वर्णन।
- **कीर्तिकौमुदी**
  लेखक — सोमेश्वर।
  विषय — गुजरात के राजा वस्तुपाल का वर्णन।
  समय — तेरहवीं शताब्दी।
- **सुकृत-संकीर्तन**
  लेखक — राजा वीसलदेव के सभापण्डित अरिसिंह।
  विषय — वस्तुपाल के धार्मिक कृत्यों का वर्णन।
  सर्ग — 11
- **मधुराविजय**
  लेखिका — विजयनगर के राजपरिवार की वधू गंगादेवी।
  विषय — कम्पण की दक्षिण विजय का वर्णन।
  समय — 1371 ई. के आसपास।
  सर्ग — 8
- **हम्मीर-महाकाव्य**
  लेखक — नयचन्द्रसूरि।
  विषय — रणथम्भौर के चौहान-नरेश हम्मीर का वर्णन।
  सर्ग — 14
- **पृथ्वीराजविजय**
  लेखक — जयानक
  समय — 1191–93 ई.
  सर्ग — अपूर्ण रूप में केवल 12 सर्गों में प्राप्त।
- **कर्णाटराजतरंगिणी**
  लेखक — डॉ. काशीनाथ मिश्र (आधुनिक काल)
  विषय — 'राजतरंगिणी' के ढाँचे पर मिथिला के कर्णाटवंशीय राजाओं का वर्णन।
  तरंग — आठ

Rationalised 2023-24